शाबान का महीना – उत्तमता व विशिष्टता

अल्लाह तआला ने अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के नाते से इस संप्रदाय व उम्मत को अपनी असीमित रहमतों व अपरिमित नेअमतों से संबोधित किया है जब के पूर्व संप्रदाय में दोषियों तथा अपराधियों की मुक्ति व मोक्ष के लिए कठिन प्रावदान थे यहाँ तक के बनी-इसराईल के लिए गाय के बछड़े की पूजा के अपराद की क्षमा के सिलसिले में फरमायाः

भाषांतरः तो तुम अपने पैदा करने वाले रब के दरबार में तौबा (पश्चाताप) करो, बस एक दुसरे को हत्या कर ड़ालो (इस प्रकार के तुम में जो नेक हैं अपराधियों को हत्या कर ड़ालें)।

(सुरह बक़रहाः 02:540

एवं हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से आदेश करता हैः-

भाषांतरः अए हबीब (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) कह दीजिए! जिन्हों ने अपनी जानों पर कठोरता की है तुम अल्लाह तआला की रहमत से दुखी ना हो, निश्चय अल्लाह तआला सम्पूर्ण पापों को क्षमा करने वाला है, निस्संदेह वह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

(सुरह अज़ ज़ुमरः 39:53)

अल्लाह तआला की कृपा व दया युं तो प्रत्येक पर रहती है किन्तु उस ने अपने पापी बन्दों की विशेष मग़फिरत व मुक्ति के लिए कुछ दिन नियुक्त किया हैं। इन् पावन दिनों में एक बरकत वाला महीना *शअबान* का भी है।

हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को हमेशा अपनी पापी उम्मत व संप्रदाय की चिन्ता रहती है। इसी लिए सवेरे व शाम प्रत्येक पल इन की मुक्ति व मोक्ष के लिए अल्लाह तआला से विनती करते रहते हैं।

अल्लाह तआला अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सन्तुष्ट रखना चाहता है इसी लिए अपने प्रिय के वास्ते प्रत्येक रात के अंतिम भाग में संसार के आकाश पर प्रकाशन कर के मुक्ति व मोक्ष, सफलता व कृपा के खज़ानों से आभूषण करता है।

इस वरदान व कृपा से इस के नेक व धर्मनिष्ठ बन्दे ही संबोधित होते हैः-

भाषांतरः वे रातों को थोड़ी देर सोते हैं एवं रात के अंतिम भाग में क्षमा की प्रार्थना करते थे।

(सुरह अज़ ज़ारियातः 51:17/18)

अब रहा साधारण लोग, वे तो उपेक्षा के सपने में पड़े रहते हैं, ना रात में इबादत के आदी हैं एवं ना सेहर के। अल्लाह तआला ने चाहा के प्रिय व महबूब के सम्पूर्ण दासों व गुलामों को अपने असीमित वरदानों से धनी करे अर्थात वर्ष के 12 महीनों में एक रात ऐसी नियुक्त की के इस में सूर्य के डूबते ही संसार (विश्व) के आकाश पर प्रकट हो कर प्रत्येक प्रकार के लोगों को मुक्ति व मोक्ष प्रदान करता है।

क्यों के हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने शअबान के महीने को अपना महीना घोषित किया है अर्थात अल्लाह तआला ने सामान्य रहमत एवं मुक्ति की इस पावन रात को विशेष रूप से शअबान में रखा।

शअबान के पाँच अक्षर एवं इन का अर्थ

शअबान के अक्षर से संबंधित रहस्य वर्णन करते हुए हज़रत सैयदुल ऑलिया, ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैः-

शअबान शब्द में 5 अक्षर हैः-

"*शीन ऐन बा अलीफ नून*"। *शीन* से कृपा तात्पर्य है। *ऐन* से बुलंदी *बा* से नेकी *अलीफ* से स्नेह व प्रेम तथा *नून* से नूर व रोशनी तात्पर्य है।

शअबान के इन पाँच अक्षरों से इस बात की ओर इशारा है के शअबान के महीने में बन्दों को अल्लाह तआला की ये नेअमते व वरदान प्रदान होंगी।

जीवन के अवस्था एवं ज़मान का बदलना एवं इस के बदलने से अभ्यास का उपदेश देते हुए शअबान का महत्व हज़रत ग़ौसे-आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने युँ वर्णन किया हैः-

भाषांतरः जीवन के 3 अवस्था हैं। भूतकाल (पूर्व स्थिति), वे तो एक समय था जो बीत गया, वर्तमान काल जो कर्म का समय है तथा भविष्य काल जो केवल एक उम्मीद है।

इसी प्रकार महीने 3 हैं *रजब* वह तो बीत गया फिर नहीं लौटेगा। एवं *रमज़ान* की प्रतीक्षा की जा रही है, तुम नहीं जानते के इसे पाने के लिए जीवित रहोगे या नहीं तथा *शअबान* 2 महीनों के बीच वास्ता है। इस में आज्ञापालन व वश्यता को बहुत कुछ समझना चाहिए।

(अल ग़ुनियतुत तालिबी तरीक़ुल हक़, जिल्द 01, पः 188)

शअबान – दुरूद की कसरत व बरकत का महीना

इस महीने में दुरूद की आयत प्रकट हुई तथा दुरूद शरीफ का आदेश आया है। इसी लिए इस महीने में कसरत से दुरूद शरीफ पढ़ने का आदेश है। जैसा के अल ग़ुनयतुल तालिबी तरीक़ुल हक़ में हैः-

भाषांतरः ये वह महीना है जिस में भलाईयों के दरवाज़े खोले जाते हैं, बरकतें प्रकट होती हैं, खता व दोष क्षमा किए जाती हैं, पाप मिटा दिए जाते हैं तथा हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की पावन सेवा में अधिकता व कसरत से दुरूद का हदिया निछावर किया जाता है जो निर्माण में सर्वश्रेष्ठ जात है तथा ये महीना नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर दुरूद व सलाम पेश किए जाने का विशेष महीना है।

(अल ग़नियतुत तालिबी तरीक़ुल हक़, जिल्द 01, पः 188)

हज़रत शैखुल इसलाम आरिफबिल्लाह इमाम मुहम्मद अनवारुल्लाह फारूखी रहमतुल्लाहि अलैह प्रवर्तक जामिया निज़ामिया फुतूहाते रब्बानिया शरह अज़कार नववया के हवाले से कहते हैः-

शैख मुहम्मद बिन अली ने हाफिज़ अबु ज़र हरवी का कथन व्याख्या किया है के दुरूद का आदेश 2 हिज्री में प्रकट हुआ, कुछ कहते हैः शअबान के महीना था, इसी वास्ता शअबान को *शहरुस सलाह* (दुरूद व सलाम का महीना) कहते हैं।

(अनवारे-अहमदी, पः 61)

दिल का मैल एवं आत्मा का ज़ंग दूर करने एवं पापों से पवित्रता प्राप्त करने के लिए, सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अल्लाह तआला के दरबार मे दुआ की जाती है जैसा के हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

भाषांतरः प्रत्येक बुद्धिमान मोमिन व्यक्ति को चाहिए के इस महीने में उपेक्षा व असावधानी ना बरते बल्कि इसी महीने में पूर्व उपेक्षाओं एवं आलस्य से पश्चाताप के द्वारा पापों से शुद्ध व पवित्र हो कर रमज़ान के स्वागत की तैयारी करे तथा अल्लाह तआला के दरबार में विनम्रता करें तथा शअबान के महीने में अल्लाह तआला के दरबार में महीने वाले सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का वसीला लेते रहें, यहाँ तक के इस के दिल का फित्रा, दूर हो तथा इस के भीतर का रोग समाप्त हो।

(अल ग़ुनिय लित तालिबी तरीक़िल हक़, जिल्द 01, पः 188)

शअबान पापों से मुक्ति का महीना

दैलमी की रिवायत हैः-

भाषांतरः हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः शअबान मेरा महीना है। रजब अल्लाह तआला का महीना है तथा रमज़ान मेरी उम्मत व संप्रदाय का महीना है, शअबान दोष व पापों के क्षमा दिलाने वाला तथा रमज़ान पवित्र व शुद्ध करने वाला है।

(दैलमी, हदीस संख्याः 35216 / अल ग़ुनिय लित तालिबी तरीक़िल हक़, जिल्द 01, पः 187)

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने रजब को अल्लाह तआला का महीना फरमाया वैसे प्रत्येक महीना अल्लाह तआला का है किन्तु रजब के महीने में अल्लाह तआला ने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को उच्च स्थान में बुलवाया गया अपने दीदार से आभूषण किया तथा असीमित वरदान व नेअमतें प्रदान किया।

इस संबंध से ये अल्लाह तआला का महीना है। एवं शअबान को अपना महीना कहा ताकि संप्रदाय इस नाते से इबादतों व ज़िक्र में व्यस्त तथा अल्लाह तआला की संतुष्टि में मग्न रह कर ज़ाहिर व बातिन को अल्लाह तआला के गुण के योग्य एवं हृदय व आत्मा को फैज़ाने-मुसतफाई बनाए।

बन्दा जब इस स्तर पर संबोधित होगा तो आने वाले महीने रमज़ान की वास्तविकता व सत्य बरकतों से संबोधित, विशेष रहमतों के योग्य होगा, क्यों के शअबान का ये महीना सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का महीना है इस लिए सम्पूर्ण महीनों से सर्वश्रेष्ठ है जैसा के हज़रत ग़ौसे आज़म दस्तगीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैः-

भाषांतरः अल्लाह तआला ने फरमाया और आप का रब जो चाहता है पैदा फरमाता तथा अधिकार फरमाता है, अल्लाह तआला ने प्रत्येक चीज़ से चार को चुना फिर चार में से एक को उत्तमता के लिए पसंद किया, फरिश्तों से हज़रत जिब्रील अलैहिस सलाम व मिकाइल अलैहिस सलाम, हज़रत इसराफील अलैहिस सलाम व हज़रत इज़राइल अलैहिस सलाम को चुन लिया फिर इन में हज़रत जिब्रील को उत्तमता के लिए पसंद किया।

तथा पैगम्बरों से हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा तथा सैयदना मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अधिकार दिया तथा इन में से हज़रत सैयदना मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को मुस्तफा बनाया तथा सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से चार सहाबा को चुनाव किया, हज़रत अबु बक्र, उमर, उसमान व अली

रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम, फिर इन में से हज़रत सैयदना अबु बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को विशेष उत्तमता प्रदान की तथा इसी प्रकार महीनों से चार को चुनाव किया, रजब, शअबान, रमज़ान एवं मुहर्रम। इन में से शअबान को पसंद किया तथा इस को हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का महीना घोषित दिया, तो जिस प्रकार सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पैगम्बरों में सर्वश्रेष्ठ हैं इसी प्रकार आप का महीना अन्य महीनों में सर्वश्रेष्ठ है।

(अल ग़ुनियतुत तालिबी तरीक़िल हक़, जिल्द 01, पः 187)

शअबान मेरा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) महीना है

इमाम बैहखी की शुअबुल इमान तथा कंज़ुल उम्माल में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, वे फरमाते हैं के हज़रत रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः

अल्लाह तआला के पावन महीनों में रजब का महीना है, तथा वह अल्लाह तआला का महीना है जिस व्यक्ति ने अल्लाह के महीना *रजब* का सम्मान किया निश्चय इस ने अल्लाह तआला के आदेश का सम्मान किया तथा जिस ने अल्लाह तआला के आदेश का सम्मान किया अल्लाह तआला उसे नेअमतों वाली जन्नतों में प्रवेश करेगा तथा अपनी बज़ी प्रसन्नता प्रदान करेगा, तथा शअबान मेरा महीना है, जिस किसी ने शअबान के महीने का सम्मान व आदर किया निश्चय उस ने मेरे (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) आदेश का सम्मान किया, तथा जिस ने मेरे आदेश का सम्मान किया तो मैं क़ियामत के दिन उस के लिए काम बनाने वाला तथा भलाईयों का केन्द्र रहुँगा। एवं रमज़ान का महीना मेरी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) संप्रदाय का महीना है, जिस व्यक्ति ने रमज़ान के महीने का सम्मान व आदर किया, उस के वैभव का अनुसार रखा, उस

के गौरव को व्यर्थ ना किया तथा उस के दिन में रोज़े रखा तथा उसकी रात में इबादत की एवं अपने भाग की सुरक्षा की तो वे रमज़ान से इस प्रकार निकलेगा के उस पर कोई पाप ना होगा जिस पर अल्लाह तआला इस से हिसाब करे।

(बैहखी शुअबुल इमान, हदीस संख्याः 3813 / कंज़ुल उम्माल, हदीस संख्याः 35217)

शअबान के महीने की उत्तमता अन्य महीनों पर

अन्य महीनों पर शअबान के महीने की उत्तमता व प्रतिष्ठा हदीस पाक में हैः-

भाषांतरः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः रजब के महीने की प्रतिष्ठा सम्पूर्ण महीनों में ऐसी है जैसे पवित्र क़ुरान की प्रतिष्ठा सम्पूर्ण आकाशी पुस्तकों पर। तथा शअबान की प्रतिष्ठा सम्पूर्ण महीनों पर ऐसी हैजैसे मेरी प्रतिष्ठा सम्पूर्ण पैगम्बरों पर। एवं रमज़ान की प्रतिष्ठा सम्पूर्ण महीनों पर ऐसी है जैसी अल्लाह तआला की प्रतिष्ठा सम्पूर्ण निर्माण पर है।

(अल ग़ुनियतुत तालिबी तरीक़ुल हक़, जिल्द 01, पः 188)

शअबान का महीना एवं सहाबा का प्रबन्ध

भाषांतरः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सहाबा किराम जब शअबान के महीने का चाँद देखते तो क़ुरान पाक को सीने से लगाए रहते तथा तिलावत में व्यस्त रहते।

मुसलमान अपने धन की ज़कात निकालते ताकि कमज़ोर एवं दरिद्र व गरीब उसे प्राप्त कर के रमज़ान के महीने के रोज़े रखने पर क्षमता प्राप्त करें। ज़िम्मेदार लोग क़ैदियों को बुलाते तथा उन में जो शरई सीमा के योग्य थे, इन पर हद जारी करते, वरना उन्हें रिहा कर देते, व्यापारी लोग अपने ज़िम्मे जो अधिकार हैं उन्हें संपादन कर देते तथा जो चीज़ें उसूल करते थे उन्हें प्राप्त कर लेते यहाँ तक के जब रमज़ान का चाँद देख लेते तो स्नान कर के एतेकाफ (एकांतवास) का प्रबन्ध करते।

(अल ग़ुनियतुत तालिबी तरीक़िल हक़, जिल्द 01, पः 188)

कैसा पावन ज़माना था तथा कैसे फरिश्ते के गुण व लक्षण वाले थे वे लोग! वर्ष का एक भाग रोज़ों में तथा अधिकतर रातें इबादतों में बिताते। भोजन इच्छा के नेत्र से उन की ओर देखता के कब इन लोग का अल्पहार बनने की कृपा मिला तथा बिस्तर आशा में रहते के कब इन्हें शारीरिक विश्राम का सामान दुँ किन्तु वे हमेशा अपने रब की संतुष्टि के इच्छुक रहते, इबादत व ज़िक्र में विनम्रता करते रहते, क़ुरान पाक इन उच्च लोगों के गुणों में है।

भाषांतरः एवं जो अपने पालनहार के सामने सजदे में और खड़े रहतें गुज़ारते हैं।

(सुरह अल फ़ुरख़ानः 25:64)

अधिक अल्लाह तआला का आदेश हैः-

भाषांतरः उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं कि वे अपने रब को बय एवं लालसा के साथ पुकारते हैं।

(सुरह अस सजदाः 32:16)

रमज़ान की जब आगमन होती है ये लोग तो युँ स्वागत करते के जैसे ये वरदान फिर प्राप्त ना होगा।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की ये पवित्र जीवन हम लोगों के लिए विशाल आदर्श तथा अभ्यास व उपदेश है इस लिए हमारे दिन व रात उपेक्षा व लापरवाही में बीत रहे हैं, सोंच-विचार में अशक्ति है, दिल व जिगर में संसार की अत्यन्त मुहब्बत व प्रेम भरा है।

शअबान के महीने में रोज़ों का प्रबन्ध

शअबान में रोज़ा रखना हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अत्यन्त प्रिय है। रमज़ान के स्वागत के नाम से 29, या 30 शअबान को रोज़ा रखने से हदीस पाक में मना किया गया।

अर्थात जामेअ तिरमिज़ी में धन्य आदेश हैः-

भाषांतरः रमज़ान के महीने से 1 या 2 दिन पूर्व रोज़ा मत रखो, किन्तु ये के कोई व्यक्ति किसी दिन रोज़े रखता था तथा वह दिन संयोग से अंतिम शअबान का हुआ तो कोई समस्या नहीं।

(जामेअ तिरमिज़ी, जिल्द 01, पः 147, पः 687)

इस निषेधाज्ञा व प्रत्यादेश को वर्णन करते हुए मजमअ उल बिहार के लेखक लिखते हैः-

भाषांतरः ताकि रमज़ान से पूर्व विश्राम प्राप्त हो तथा रमज़ान में सजीवता बाखी रहे तथा ये भी कहा गया ताकि नफ्ल का फर्ज़ से अलग ना हो।

(मजमअ बिहार उल अनवार, जिल्द 04, पः 233)

सब से उच्च रोज़ों से संबंधित सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दरबार में निवेदन किया गया तो फरमायाः-

भाषांतरः शअबान के महीने के रोज़े रमज़ान के सम्मान के लिए सब से उच्च रोज़े हैं।

(अल ग़ुनियतुत तालिबी तरीक़िल हक़, जिल्द 01, पः 187)

एवं आदेश करते हैः-

भाषांतरः जो शअबान के महीने के अंतिम सोमवार को रोज़े रखे इस के पापों की मुक्ति कर दी गई।

(अल ग़ुनियतुत तालिबी तरीक़िल हक़, जिल्द 01, पः 187)

इस रिवायत के प्रति हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं-

भाषांतरः इस से तात्पर्य शअबान का अंतिम सोमवार है ना के महीने का अंतिम दिन क्यों के शअबान के महीने के अंतिम 1 या 2 दिन रोज़ा रख कर रमज़ान का स्वागत करना निषिद्ध है।

(अल ग़ुनियतुत तालिबी तरीक़िल हक़, जिल्द 01, पः 187)

नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इस महीने में अधिकता से रोज़ों का प्रबन्ध करतेः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सैयदतना आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैः-

भाषांतरः सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम शअबान में रोज़ों का इस प्रकार प्रबन्ध करते यहाँ तक के हम समझते के अब तो

रोज़ा नहीं रखेंगे तथा मैं ने रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को रमज़ान के महीने के सिवा किसी महीने में लगातार रोज़े रखते नहीं देखा एवं शअबान के मीने से अधिक किसी महीने में रोज़ों का प्रबन्ध करते नहीं देखा।

(अल ग़ुनियतुत तालिबी तरीक़िल हक़, जिल्द 01, पः 186)

हज सैयदतना आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से वर्णित है हज़रत सैयदना रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम शअबान से बढ़ कर किसी महीने में अधिकता से रोज़े नहीं रखते क्यों के इस में जीवित को आत्मा देहान्त करने वालों में लिख दी जाती है। यहाँ तक के मनुष्य विवाह करता है जब के इस का नाम इन लोगों में शामिल कर लिया जाता है जो देहान्त करने वाले होंगे तथा निश्चय मनुष्य हज्ज का उद्देश्य करता है जब के उस का नाम देहान्त करने वालों में शामिल किया जाता है।

(इब्न मरदवे, इब्न असाकिर, दुर्रे मनसूर, सुरह दुखानः 01)

एक अनिवार्य स्पष्टीकरण

याद रखना चाहिए के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का ये आदेश के "मैं रोज़े की स्थिति में रहुँ तथा मेरा नाम लिखा जाए" वास्तव में संप्रदाय को रोज़े का महत्व बतलाने इस के प्रबन्ध के निर्देश के लिए है।

वरना सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का धन्य नाम लिखना हज़रत इज़राईल अलैहिस सलाम के लिए कृपा व उत्तमता की बात है तथा सरकार दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का रोज़ा रखना रोज़ो को उत्तमता व प्रतिष्ठा प्रदान के लिए है वरना आज भी ग़ैर-मुसलिम भूके-प्यासे रहते हैं इन के इस कर्म (उपवास व अनशन) को

ना रोज़े का नाम दिया जा सकता है ना सवाब की शुभ-सूचना तथा खुद इसलाम जाति भी बिना नीयत निर्धारित समय में भूके प्यासे रहें या रात में भूके रहें तो वह रोज़ा नहीं बन सकता क्यों के पूर्ण इबादतें वास्तव में सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की प्यारी अदाओं एवं पावन कथन का नाम है तथा रोज़े का बुनियादी उद्देश्य शहवतों (इच्छाओं) को तोड़ना, शहवात तथा नफ्स के विरुद्ध करना है।

सरकार नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की प्रतिभा ये है के मनुष्य के साथ रहने वाला भी आप की – की बरकत से आप का आज्ञाकारी हो गया, सरकार पाक के नाते से इच्छा व कामना का विचार भी *अलयअज़बिल्लाह* इमान के खो देने के योग्य है।

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सत्य रूप से अपने पावन देहान्त का दिन, महीना, वर्ष एवं दिनांक सब जानते हैं। इसी लिए आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को *मअज़अल्लाह* ऐसी कोई चिन्ता नहीं हुई जो साधारण मनुष्यों को अपनी मृत्यु के भय में होती है।

ये केहना केवल सत्य देहान्त के प्रबन्ध के लिए तथा संप्रदाय की शिक्षा के लिए था। अर्थात नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सहाबा किराम को अपने देहान्त की सूचना का इशारा पूर्व ही प्रदान किए हैं जैसा के बुखारी शरीफ, किताब उल मनाखिब, जिल्द 01, पः 516, हदीस संख्याः 3654 में उल्लेख है।

शअबान की प्रतिष्ठा व शबे बरात एवं सहाबा किराम

शअबान के महीने की प्रतिष्ठा एवं शबे बरात की उत्तमता वर्ण हदीसों से मालूम हुई, ये हदीसें जिन सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से वर्णित व व्याख्या है इस के धन्य नाम निम्नलिखित हैः-

(1)- हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।

(2)- हज़रत सैयदना अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(3)- सैयदतना आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा।
(4)- हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(5)- हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(6)- हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(7)- हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(8)- हज़रत अबु मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(9)- हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(10)- हज़रत राशिद बिन सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(11)- हज़रत उसमान बिन मुहम्मद बिन मुग़ैरह बिन अक़नस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(12)- हज़रत उसमान बिन अबु अल आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(13)- हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(14)- हज़रत अबु सअलबा क़शनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(15)- हज़रत औफ बिन मालिक अशज़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(16)- हज़रत अबु सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।

शअबान व शबे-बरात की प्रतिष्ठा एवं हदीस की पुस्तकें

शअन एवं शबे बरात की उपर्युक्त वर्णन सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से वर्णित हदीसों के निम्नलिखित पुस्तकों में उपलब्ध हैः-

(1)- जामेअ तिरमिज़ी।
(2)- सुनन नसाई।
(3)- सुनन अबु दाउद।
(4)- सुनन इब्न माजह।
(5)- मुसनद अहमद।
(6)- मुसतदरक अला सहिहैन।
(7)- मुसनद इसहाख बिन राहविय।
(8)- मुसन्नफ अब्दुर रज़्ज़ाख।

(9)- मुसनद अबु यअला।

(10)- मुसनद अल बज़्ज़ार।

(111) मुसनद दैलमी।

(12)- सहीह इब्न हिब्बान।

(13)- मुअजम कबीर तबरानी।

(14)- मुअजम औसत तबरानी।

(15)- मुसन्नफ इब्न अबी शैबा।

(16)- मुसनद अब्द बिन हमीद।

(17)- शुअबुल इमान लिल बैहखी।

(18)- अद दआवात अल कबीर लिल बैहखी।

(19)- इब्न मरदुय।

(20)- इब्न असाकिर।

(21)- अल मुतालिब अल आलियह लिल इब्न हज्र असखलानी।

(21)- अल सुनन अस सुग़रा लिल बैहखी।

(22)- फज़ाइल उल औखात लिल बैहखी।

(23)- अल उबानियह अल कुबरा।

(24)- मजमअ उज़ ज़वाइद।

(25)- जामेअ उल अहादीस।

(26)- जमअ उल जवामेअ।

(27)- जामेअ उल उसूल मन अहादीस अर रसूल।

(28)- बग़ियह उल बाहस अन ज़वाइद मुसनद अल हारिस।

(29)- ग़िलयतुल मखसद फी ज़वाइदुल मुसनद।

(30)- कंज़ुल उम्माल।

(31)- शरहुस सुन्नह।

(32)- अत तरग़ीब उल तरहीब।

(33)- मिशकातुल मसाबीह।

(34)- ज़ुजाजातुल मसाबीह।

इस के बावजूद कुछ लोग शअबान एवं शबे-बरात की प्रतिष्ठा व उत्तमता से संबंधिक कलाम रकते हैं, कुछ लोग तो उसे बेबुनियाद (निर्मूल व निराधार) कहते हैं, अर्थात हम यहाँ कुछ उशूली बातें वर्णन करते हैः-

शअबान व शबे-बरात की प्रतिष्ठा की हदीसों व सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के कर्म के बारे में बताना ये हैः-

(1)- इन हदीसों की कुछ सनदें वे हैं जिन के *रवाह सखात* हैं। इन सनदों में कोई कलाम नहीं। अर्थात ऐसी रिवायतें बहस एवं दलील के योग्य है।

(2)- कुछ सनदें ऐसी हैं जिन में कोई रावी ज़ईफ हो, इसी अर्थ की अन्य रिवायतों की सनदों में कोई ज़ईफ रावी ना हो तो उस ज़ईफ रावी के कारण से अन्य रिवायतें ज़ईफ नहीं होती, अर्थात इस प्रकार की रिवायतें भी स्वीकृत व प्रामाणिक हैं।

(3)- किसी रिवायत की सनद में कोई ज़ईफ रावी हो तो उस रिवायत को ज़ईफ कहते हैं, अतः ज़ईफ हदीस छोड़ने के योग्य नहीं होती।